Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

भारतीय समाज में नारी की दशा

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

भारतीय समाज में नारी की दशा

Nirmala

Vice Principal, Seth Navrang Ram Manohar Lohiya, Jay Ram Kanya Mahavidhyala, Lohar Majara, Kurukshetra

---------------------------------x---------------------------------

भारतीय समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है।'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। नारी ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। नारी को गुणों का पुँज बताया गया है-'सूर्य जैसा तेज, चन्द्र जैसी शीतलता, समुद्र जैसी गंभीरता,पवन जैसी क्षमा,आकाश जैसी विशालता, वृक्षों जैसा त्याग ' का एकत्रीकरण नारी में है।इन सब उपमाओं के कारण नारी स्वयं पर गर्व महसूस करती है।

प्राचीन भारत में नारी

प्राचीन भारत में स्त्रियों की दशा के विषय में इतिहासकारों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं. स्थूल रूप में इन ऐतिहासिक दृष्टिकोणों को चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण

वामपंथी दृष्टिकोण

नारीवादी दृष्टिकोण

दलित लेखकों का दृष्टिकोण

जहाँ **राष्ट्रवादी विचारक** यह मानते हैं कि वैदिक-युग में भारत में नारी को उच्च-स्थिति प्राप्त थी. नारी की स्थिति में विभिन्न बाह्य कारणों से ह्रास हुआ. परिवर्तित परिस्थितियों के कारण ही नारी पर विभिन्न बन्धन लगा दिये गये जो कि उस युग में अपरिहार्य थे. इसी प्रकार वर्ण-व्यवस्था को भी कर्म पर आधारित और बाद के काल की अपेक्षा लचीला बताते हुये ये विचारक उसका बचाव करते हैं. **वामपंथी विचारक** राष्ट्रवादी विद्वानों के इन विचारों से सर्वथा असहमत हैं. उनके अनुसार स्त्रियों तथा शूद्रों की अधीन स्थिति तत्कालीन उच्च-वर्ग का षड्यंत्र है, जिससे वे वर्ग-संघर्ष को दबा सकें. उच्च-वर्ग अर्थात् मुख्यतः ब्राह्मण (क्योंकि समाज के लिये नियम बनाने का कार्य ब्राह्मणों का ही था) शूद्रों को अस्पृश्यता के नाम पर तथा नारियों को परिवारवाद के नाम पर संगठित नहीं होने देना चाहते थे.

नारीवादी विचारक भी राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का विरोध करते हैं. उनके अनुसार तत्कालीन सामाजिक ढाँचा पितृसत्तात्मक था और धर्मगुरुओं ने जानबूझकर नारी की अधीनता की स्थिति को बनाये रखा. ये विचारक यह भी नहीं मानते कि वैदिक युग में स्त्रियों की बहुत अच्छी थी, हाँ स्मृतिकाल से अच्छी थी, इस बात पर सहमत हैं. दलित विचारक स्मृतियों और विशेशत मनुस्मृति के कटु आलोचक हैं. वे यह मानते हैं कि शूद्रों की युगों-युगों की दासता इन्हीं स्मृतियों के विविध प्रावधानों का परिणाम है. वे मनुस्मृति के प्रथम अध्याय के ३१वें[i] और ९१वें[ii] श्लोक का मुख्यतः विरोध करते हैं जिनमें क्रमशः शूद्रों की ब्रह्मा की जंघा से उत्पत्ति तथा सभी वर्णों की सेवा शूद्रों का कर्त्तव्य बताया गया है.

प्राचीन भारत में नारी की स्थिति के विषय में सबसे अधिक विस्तार से वर्णन राष्ट्रवादी विचारक ए.एस. अल्टेकर ने अपनी पुस्तक में किया है. उन्होंने नारी की शिक्षा, विवाह तथा विवाह-विच्छेद, गृहस्थ जीवन, विधवा की स्थिति, नारी का सार्वजनिक जीवन, धार्मिक जीवन, सम्पत्ति के अधिकार, नारी का पहनावा और रहन-सहन, नारी के प्रति सामान्य दृष्टिकोण आदि पर प्रकाश डाला है. अल्टेकर के अनुसार प्राचीन भारत में वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति समाज और परिवार में उच्च थी, परन्तु पश्चातवर्ती काल में कई कारणों से उसकी स्थिति में ह्रास होता गया. परिवार के भीतर नारी की स्थिति में अवनति का प्रमुख कारण अल्टेकर अनार्य स्त्रियों का प्रवेश मानते हैं. वे नारी को संपत्ति का अधिकार न देने, नारी को शासन के पदों से दूर रखने, आर्यों द्वारा पुत्रोत्पत्ति की कामना करने आदि के पीछे के कारणों को जानने का

प्रयास करते हैं तथा उन्होंने कई बातों का स्पष्टीकरण भी दिया है. उदाहरण के लिये उनके अनुसार महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार न देने का कारण यह है कि उनमें लड़ाकू क्षमता का अभाव होता है, जो कि सम्पत्ति की रक्षा के लिये आवश्यक होता है. इस प्रकार अल्टेकर ने उन अनेक बातों में भारतीय संस्कृति का पक्ष लिया है, जिसके लिये हमारी संस्कृति की आलोचना की जाती है. उन्होंने अपनी पुस्तक के प्रथम संस्करण की भूमिका में स्वयं यह स्वीकार किया है कि निष्पक्ष रहने के प्रयासों के पश्चात् भी वे कहीं-कहीं प्राचीन संस्कृति के पक्ष में हो गये हैं. प्रसिद्ध राष्ट्रवादी इतिहासकार आर. सी. दत्त ने भी अल्तेकर के दृष्टिकोण का समर्थन किया है उनके अनुसार, "महिलाओं को पूरी तरह अलग-अलग रखना और उन पर पाबन्दियाँ लगाना हिन्दू परम्परा नहीं थी. मुसलमानों के आने तक यह बातें बिल्कुल अजनबी थीं... . महिलाओं को ऐसी श्रेष्ठ स्थिति हिन्दुओं के अलावा और किसी प्राचीन राष्ट्र में नहीं दी गयी थी."[iii] शकुन्तला राव शास्त्री ने अपनी पुस्तक 'वूमेन इन सेक्रेड लॉज़' में इसी प्रकार के निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं.

वैदिक एवं महाकाव्य काल में नारी स्वातंत्र्य प्रयाप्त था। धर्म व आध्यात्मिक क्षेत्र मे उन्हे समान अवसर प्राप्त थे। उनका उपनयन संस्कार होता था,वे वेदाध्ययन करती थी,आचार्य,ॠषि एवं सन्यासिनी भी होती थी। परन्तु भारत पर विदेशी आक्रमण (पराधीनता) कालखन्ड में स्त्री स्वातंत्र्य पर प्रतिबन्ध दिखाई पडता है। विदेशी समाज नारी को भोग्या मानकार उनका अपहरण करता था। अतः आत्मरक्षार्थ समाज में प्रतिबंध आपातकाल के कारण लगाए थे जिनकी छाया आज तक दिखाई पडती है। घर की चारदिवारी में नारी सिमट गयी।

पराधीनता के कालखण्ड के व्यतीत हो जाने पर समाज में नारी शिक्षा पर बल देना प्रारम्भ कर दिया। नारी जीवन जगत का प्रत्येक क्षेत्र में पदार्पण कर अपनी सार्थक भूमिका निभा रही है। किसी विद्‌वान ने कहा था कि मातृशक्ति में लक्ष्मीं,सरस्वती एवं दुर्गा तीनों रूप निहित हैं। लक्ष्मीं रूप में सौंदर्य , उदारता एवं आत्मनिर्भता का प्रतीक है,दुर्गा रूप शासन एवं शक्ति का प्रतीक है,सरस्वती रूप बुद्धिमान विमल विवेक,सात्विकता और साधना का प्रतीक है। भारतीय समाज नारी के अन्दर लक्ष्मी, सरस्वती एवं दुर्गा का समन्वित रूप व कर्त्तव्य का समर्थक रहा है। परन्तु वर्तमान समय में नारी के प्रति संवेदनशील समाज का दृष्टिकोण बहुत ही भद्दा है। कहीं नारी अपहरण व बलात्कार,कहीं दहेज का लिए जलाया जाना व कहीं भ्रुण हत्या जैसी घटनाएँ सामान्य हो गई हैं। सर्वाधिक कष्टकर तो है कि कन्या को मानव न समझकर दान की वस्तु समझा जाता है। नारी के सम्बन्ध में इन्ही मान्यताओं को देखकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा-

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ।

आँचल में है दूध और आँखो में पानी ।।"

आधुनिक काल के प्रमुख नारीवादी इतिहासकारों तथा विचारकों ने अल्टेकर और शास्त्री के उपर्युक्त स्पष्टीकरणों की आलोचना की है. आर.सी. दत्त के विरोध में प्रसिद्ध नारीवादी विचारक डा. उमा चक्रवर्ती कहती हैं, "... ... मनु तथा अन्य कानून-निर्माताओं ने लड़कियों की कम उम्र में ही शादी की हिमायत की थी. सातवीं सदी में हर्षवर्धन के प्राम्भिक काल से संबंधित विवरणों में सती-प्रथा उच्च जति की महिलाओं के साथ साफ़ जुड़ी देखी जा सकती है. महिलाओं का अधीनीकरण सुनिश्चित करने वाली संस्थाओं का ढाँचा अपने मूलरूप में मुस्लिम धर्म के उदय से भी काफ़ी पहले अस्तित्व में आ चुका था. इस्लाम के अनुयायियों का आना तो इन तमाम उत्पीड़क कुरीतियों को वैधता देने के लिये एक आसान बहाना भर है."[iv]

समाज में नारी के विभिन्न रूपों और उनकी महत्ता स्थापित की गई है। भारतीय समाज में यदि नारी की स्थिति की प्रमुख भुमिकाओं का वर्णन किया जाए तो तीन प्रमुख हैं- कन्या,पत्नी, माता ।

कन्या रूप में नारीः-

भारतीय समाज में कन्या का विशेष महत्त्व है । 'नवरात्र ' अवसर पर वर्ष में दो बार 'कुमारिका ' पूजन किया जाता है । किन्तु समाज में बेटी के जन्म पर खुशी के स्थान पर मातम छा जाता है । यही नही गर्भनिरीक्षण द्‌वारा कन्या का पता लगाने पर भ्रुण हत्या जैसी अपराधिक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है । बेटी की सुरक्षा,पवित्रता और विवाह की चिन्ता उसके जन्मदाता को त्रस्त करती है । बचपन से ही उसे पराया धन कहा जाने लगता है । जब एक कन्या को पराया धन कहकर संबोधित किया जाता है, तो भला उसके लिए अपनापन कैसे आएगा । आज समाज का मानव रूपी दानव इतवी दरींदगी में धंस चुका है कि वह सात साल व दूध मूँही बच्ची को भी अपनी हवस का शिकार बनाने से नही चुकते । नारी को सदा रक्षणीय घोषित किया गया है अतः मनु ने कहा-

www.ignited.in

"पिता रक्षति कौमार्, भर्ता रक्षति यौवने ।

बाद्धक्ये रक्षति पुत्रः,न स्त्री स्वातंत्र्य अर्हति ।।"

अर्थात् स्त्री को कुमारी अवस्था में पिता ,युवाकाल में पति और वृद्धावस्था में

नारीवादी विचारकों ने यह माना है कि प्राचीन भारत में नारी की स्थिति में ह्रास का कारण हिन्दू समाज की पितृसत्तात्मक संरचना थी न कि कोई बाहरी कारण. इसके लिये नारीवादी विचारक प्रमुख दोष स्मृतियों के नारी-सम्बन्धी नकारात्मक प्रावधानों को देते हैं, क्योंकि तत्कालीन समाज में स्मृतिग्रन्थ सामाजिक आचारसंहिता के रूप में मान्य थे और उनमें लिखी बातों का जनजीवन पर व्यापक प्रभाव था. प्रमुख स्मृतियों में नारी-शिक्षा पर रोक, उनका कम उम्र में विवाह करने सम्बन्धी प्रावधान, उनको सम्पत्ति में समान अधिकार न देना आदि प्रावधानों के कारण समाज में स्त्रियों की स्थिति में अवनति होती गयी. नारीवादी विचारकों के अनुसार हमें अपनी कमियों का स्पष्टीकरण देने के स्थान पर उनको स्वीकार करना चाहिये ताकि वर्तमान में नारी की दशा में सुधार लाने के उपाय ढूँढे जा सकें.

संतान के संरक्षण में रहना चाहिए । अतः कन्या रूप में नारी न तो सुरक्षित है और न ही बंधन मुक्त हे ।

पत्नी रूप में नारीः-

पत्नी का अर्थ है स्वामिनी । नारी को पुरूष की अर्धांगिनी कहा गया है । भारतीय समाज में गृह की कल्पना गृहिणी के बिना संभव नहीं है । ऋग्वेद की आज्ञा से स्त्री ही घर है । पत्नी के विविध रूपों व कार्यों की चर्चा करते हुए कहा गया है-

"कार्येषु मंत्री, कारणेषु दासी, गृहेषु लक्ष्मी क्षमया धरित्री ।

स्न्नेहेषु माता,शयनेषु रम्भा सहनाम नारी इति धर्म पत्नी ।।"

परन्तु पत्नी के रूप में नारी के शोषण की कहानियाँ तो मर्यादा षुरूषोत्तम राम के दौरान भी हुई हैं । स्वयं माता सीता को भगवान राम ने शंकित निगाहों से देखा और माता सीता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ी फिक अयोध्या में एक धोबी के कबने पर माता सीता को वनवास भेज दिया । रावण द्वारा माता सीता के अपहरण की छाया आज के युग में भी प्रसांगिक होती है ।

माता रूप में नारीः-

भारतीय समाज में माता का स्थान वेंदों में सर्वोपरि माना गया है मातृ देवो भव अर्थात् माता देवताओं के समान होती है । माता के महत्व को प्रतिपादित करते हुए मनुस्मृति का कथन है-

"उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता ।

सहस्रेतु पिता पितृन्माता गौरवाणि रिच्चते ।।"

अर्थात् एक आचार्य का महत्त्व दस उपाध्यायों से बढ़कर तथा एक पिता का महत्त्व सौ आचार्यों से बढ़कर है परन्तु माता का महत्त्व एक हजार पिताओं से बढ़कर है ।

नारी जीवन की पूर्णता उसके मातृत्न से होती है । उसके पुत्र को जन्म दिया तो जच्चा का मान बढ़ जाता है क्योकिं उसने वंश परंपरा को आगे बढ़ाया है । स्मृतियों में माता का भरण-पोषण करना पुत्र का कर्त्तव्य कहा गया है किन्तु वर्तमान में यदि माता विधवा हुई, तो उसके पुत्र व वधुएँ उसकी वृद्धावस्था में दुर्गति करती हैं। माता-पिता द्वारा जीवन तंगी में गुजारकर बच्चों की भविष्य की खुशी के लिए साधन जुटाए जाते है और आशियाना बनाया जाता है परन्तु वही पुत्र उस माता को बेसहारा धक्के मारकर घर से बाहर निकाल देता है इससे बड़ी विडम्बना आज के युग में माता रूप में नारी की ओर क्या होगी ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पुराकाल से आज तक निरंतर नारी का अंतहीन उत्पीड़न और शोषण पुरूषों द्वारा होता जा रहा है । भारतीय समाज पुरूष प्रधान है । बचपन से जवानी तक नारी को अपनी रक्षा स्वयं करनी पड़ती है । वह घर के अंदर व घर के बाहर अनेक कुकृत्यों को सांसारिक पतन मानकर भगवान की शरण में गई तो तथाकथित धर्मगुरूओं ने भी नही बख्शा । नगरों में कुछ जागरूक महिलाएँ नारी को शोषण मुक्त कर पुरूषों के समान बनाने के लिए आन्दोलन कर रही हैं लेकिन आवाज नही सुनी जा रही है । संविधान में नर-नारी को समान अधिकार दिया गया है किन्तु व्यवहार से पुरूष प्रबल हैं। स्वतंत्र भारत के सभी राजनितिज्ञ अपने-अपने समय में औरत की स्थिति को मुद्दा बनाकर अपने वोट बैंक भरते हैं

परन्तु वास्तव में हितैशी कोई नहीं है । यही कारण है कि संसद और विधानमण्डलों में महिलाओं की तैंतीस प्रतिशत (33%) स्थान सुरक्षित करने का विधेयक लटका हुआ है ।

अतः हम सबको मिलकर इन कुरीतियों, बुराइयों को बंद करना होगा । जब तक स्त्री पुरूष सच्चे मायनो में एक समान नहीं माने जायेंगे, तब तक कोई भी स्त्री नहीं चाहेगी कि उसकी कोख में पल रही कन्या हो और वह भी उसी की तरब तिरस्कृत हो । वह ईश्वर से यही प्रार्थना करेगी कि "अगले जन्म मोहे बिटिया न की जो ।"

1. “नारी” शोषित से शोषण तक ।

औरत और ज़ुल्म दोनों का बहुत ही गहरा रिश्ता रहा है। मानव सभ्यता का विकास जैसे-जैसे रफ्तार पकड़ता गया उसी के साथ ही औरत का शोषण भी बढ़ता गया। पूर्व वैदिक काल के मातृ सत्तात्मक समाज ने करवट ली और सत्ता पुरुष प्रधान होते ही औरत की स्थिति बद से बदतर होती चली गयी। महिला शक्ति से परिचित पुरुष ने उसे दबाना शुरु किया, नारी को शिक्षा,धार्मिक अनुष्ठान, रणकौशल आदि शक्ति प्रदायी विधाओं से बे दखल कर घर की चार दीवारी में बंद करना शुरू किया। पुरूष के बिना उसका अस्तित्व बेमानी समझा जाने लगा।

इसके बाद के युग की तस्वीर सती प्रथा, पर्दा प्रथा आदि जैसे रोगों से ग्रस्त हो गया।

सन 1947 में परतंत्र देश की तकदीर बदली,भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ। लेकिन सिर्फ देश आजाद हुआ औरत को गुलामी से आजादी नहीं मिली। स्वतंत्र भारत के सभी राजनीतिकों ने अपने-अपने समय में औरत की स्थिति को मुद्दा बनाकर अपना गला खूब साफ किया और उससे अपना वोट बैंक भरते रहे।

इक्कीसवीं सदी आते-आते पूरा वैश्विक परिदृश्य बदल चुका है। आज की नारी सशक्त है,उसने तमाम क्षेत्र में अपनी बुलन्दी के झंडे गाड़ दिये हैं। आज विज्ञान के इस युग में सबकुछ बदल चुका है। “सबकुछ” महिला शोषण के तरीके भी। आज शोषण घर से बाहर बीच चौराहे होने लगा है। और जो सबसे बड़ा बदलाव है वो ये कि आज की सशक्त नारी ने औरत शोषण की जिम्मेदारी भी खुद ही सँभाल ली है। वह खुद ही इन कर्मों को अंजाम देती है। अब आप इसे युगों तक की उसकी शोषित मानसिकता का परिणाम समझें या नारी सशक्तिकरण की उपलब्धि। पर यह सच है कि वर्तमान में महिला हिंसा, दहेज़, हत्या या भ्रूण हत्या चाहे शोषण का स्वरूप जो भी हो पर इसके पीछे हाथ स्वयं औरत का ही होता है। औरत ने अपनी ताकत का कद इतना बढा लिया है कि जन्म लेने से लेकर किसी के जीने तक का हक भी वह तय करने लगी है।

आज लिंगानुपात जिस तरह बढ रहा है नि:संदेह भविष्य में उसका परिणाम भी औरत को ही भुगतना पड़ेगा। कन्या जन्म के घटते दर की भयानकता को देखकर मन में बरबस एक सवाल उठता है नारी शोषण कहाँ तक? कब तक?

2. "भारत में नारीवाद को पश्चिमी परिप्रेक्ष्य में देखा गया है, जबकि ज़रूरत उसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में समझने की है. यद्यपि पितृसत्ता हर युग और काल में मौजूद रही है, पर भारत में यह अत्यधिक जटिल ताने-बाने के साथ उपस्थित है, जिसमें जाति, वर्ण, वर्ग और धर्म सभी सम्मिलित हैं. इसे 'ब्राह्मणवादी पितृसत्ता' का नाम दिया गया है. इसका यह अर्थ नहीं कि इसका निशाना कोई एक जाति है. यह भारतीय समाज में व्याप्त स्त्री की पराधीनता के अलग-अलग रूपों को दर्शाता है.

मेरी कोशिश नारीवाद को इसी भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में समझने की और मौजूदा समस्याओं को इस आधार पर विश्लेषित करने की है."

3. नारी कुदरत क़ी बनाई अनिवार्य रचना है ,जिसके उत्थान हेतु समाज के बुद्धिजीवी वर्ग ने सतत संघर्ष किया है। आज क़ी बहुमुखी प्रतिभाशील नारी उसी सतत प्रयास का परिणाम है। आज नारी ने हर क्षेत्र में अपना प्रभुत्व कायम किया है, चाहे वह शासकीय क्षेत्र हो या सामाजिक, घर हो या कोर्ट कचहरी , डाक्टर, इंजिनीयर, अथवा सेना का क्षेत्र, जो क्षेत्र पहले सिर्फ पुरुषो के आधिपत्य माने जाते थे, उनमे स्त्रियों क़ी भागीदारी प्रशंसा का विषय है। इसी तरह प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया भी स्त्रीयों क़ी भागीदारी से अछूता नहीं है ।

प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया समाज के दर्पण होते है, जिसमे समाज अपना अक्श देखकर आत्मावलोकन कर सकता है । पिछले कई वर्षो से मीडिया में नारी क़ी भूमिका सोचनीय होती जा रही है। आज प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया जिस तरह नारी क़ी अस्मिता को भुना रहा है, वह जाने - अनजाने समाज को एक अंतहीन गर्त क़ी ओर धकेलते जा रहा है। इसका दुष्परिणाम यह है क़ी आज नारी ऊँचे से ऊँचे ओहदे या प्रोफेशन में कार्यरत क्यों ना हो वह सदैव एक अनजाने भय से ग्रसित रहती है। क्या है ये अनजाना भय ? निश्चित रूप से यह केवल उसके नारी होने

www.ignited.in

का भय है जो हर समय उसे असुरक्षित होने का अहसास दिलाता रहता है। आलम यह है क़ी आज नारी घर क़ी चारदीवारी में भी अपनी अस्मिता बचने में अक्षम है।

प्रारंभ में प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया धार्मिक, सात्विक संदेशो द्वारा समाज को सही मार्गदर्शन देने का आधार था , लेकिन धीरे - धीरे उसका भी व्यवसायीकरण हो गया और झूठी लोकप्रियता भुनाने वह समाज के पथप्रेरक के रूप में कम और पथभ्रमित करने के माध्यम के रूप में अधिक नज़र आने लगा। शुरुआत हम छोटे परदे से करते है, जहा लगभग हर सीरीयल मे मानवीय संबंधो के आदर्श रूप को नकारते हुए नारी को एक ऐसी " वस्तु " के रूप में दर्शको के सामने परोसा जाता है, जंहा वह केवल एक भोग्या मात्र ही दिखाई जाती है। हर दूसरा सीरीयल नारी के पूज्यनीय चरित्र क़ी धज्जिया उडाता हुआ नज़र आता है। एक नारी पात्र ही दूसरी नारी पात्र पर शोषण और अत्याचार करती हुई नज़र आती है। नारी के विकृत रूप को दिखाने क़ी रही सही कसर एक ख्याति प्राप्त निर्देशिका के डेली सोप सीरीयलों ने पूरी कर दी जिसने रिश्तो क़ी सभी मर्यादाए तोड़ दी और कितने आश्चर्य क़ी बात है कि यही सब सीरीयल काउंट डाउन शो में अपनी सफलता के परचम गाड़ते हुए टाप नम्बरों पर होते है।

इसी तरह यदि हम विभिन्न विज्ञापनों कि बात करे तो विज्ञापनों ने तो हमारी संस्कृति कि सीमा ही लाँघ दी। विज्ञापनों में नारी कि भूमिका कंही से भी विकृत नहीं बशर्ते कि उससे समाज को अच्छा सन्देश मिले लेकिन विज्ञापनों में नारी के नग्न रूप का प्रदर्शन समाज में नारी के प्रति आकर्षण नहीं बल्कि विकर्षण पैदा करता है । अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा विज्ञापन समाज में गन्दी मानसिकता पनपने पर जोर देता है ओर सामाजिक अपराधो को बल मिलता है। बलात्कार, महिला शोषण, यौन शोषण आदि सब इसी विकर्षण का नतीजा है। अधिकतर विज्ञापनों में नारी देह प्रदर्शन ही देखने को मिलता है। किसी ने तर्क के आधार पर यह जानने का प्रयास ही नहीं किया कि देह प्रदर्शन के कारन बाजार में कोई वस्तु बिकती है या अपनी गुणवत्ता के कारन। किसी वस्तु को विज्ञापनों में देह प्रदर्शन के बिना प्रदर्शित किया जाये तो उसकी बिक्री कम होगी या नहीं होगी ऐसा कोई तर्क स्वीकार्य नहीं है। कितने अफ़सोस कि बात है कि आज किसी वस्तु के प्रचार - प्रसार के लिए एक नारी को किसी वस्तु कि तरह उपयोग किया जा रहा है।

फिल्मो ने तो नारी देह के प्रदर्शन में सभी को पीछे छोड़ दिया , जंहा अभिनेत्रिया आपत्तिजनक अंगप्रदर्शन और दृश्य करने के बाद यह कहकर पल्ला झाड लेती है कि फला सीन में कोई बुराई नहीं है और यह तो फिल्म कि मांग और सिचुएशन के अनुरूप है। इससे शर्मनाक स्थिति और क्या हो सकती है जब स्वयं नारी ही एक अनुचित प्रदर्शन को लेकर इस तरह का तर्क प्रस्तुत करे। " क्या कूल है हम..." "गरम - मसाला" , नो एंट्री जैसी घटिया कॉमेडी फिल्मे दर्शको के सामने परोसकर निर्माता - निर्देशक समाज को कौन सी दिशा देना चाहते है ये मेरी समझ से परे है । और उसके बाद निर्माता - निर्देशकों द्वारा यह टिपण्णी किया जाना कि ऐसी फिल्मे आज के दर्शको कि डिमांड है और यंग जेनरेशन के अनुरूप है, बहुत ही हास्यास्पद लगता है। निश्चित रूप से ये फिल्मे जो "ऐ " सर्टिफिकेट नहीं है (?) पुरे परिवार के साथ बैठकर देखी जा सकती है बशर्ते कि पूरा परिवार अलग -अलग कमरों में बैठकर फिल्मे देख रहा हो। प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में नारी देह के प्रदर्शन से फैलती गन्दी मानसिकता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दिल्ली के एक प्रतिष्ठित स्कूल की छात्रा का आपत्तिजनक एम् एम् एस किसी वायरस कि भाति लोकप्रिय (?) हो गया और इंदौर के किसी कालेज की लडकियों कि आपत्तिजनक तस्वीरे किसी "विशेष" इंटरनेट साईट पर देखी गई , जिससे लडकिया पूरी तरह अनजान थी। इस बढ़ते साईबर क्राइम का जिम्मेदार कौन है ?

माना कि नारी सुन्दरता का प्रतीक है , और सुन्दर दृश्य मन को प्रफुल्लित करता है, परन्तु जब इस सौंदर्य कि सीमा लांघी जाती है, तो वही उसके बुरे स्वरुप का परिचायक बन जाता है। किसी भी देश और समाज कि उन्नति तभी संभव है , जब उस देश की, उस समाज की नारी का वंहा सम्मान हो। आज प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया में नारी कि भूमिका में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है । हमें पाश्चात्य सभ्यता एवं वातावरण का अनुकरण ना करके समाज को भारतीय संस्कृति की ओर लौटने के लिए प्रेरित करना होगा । भोगवादी प्रवृत्ति को समाप्त करके ऐसा वातावरण बनाना होगा जंहा नारी को पूर्ववत आदर एवं सम्मान मिले। आज के इस भोगवादी समाज में नारी सम्मान के अपमान कि धृष्टता करने वालो को यह बताने कि आवश्यकता है कि नारी केवल सहनशीलता और त्याग कि मूर्ती नहीं है, बल्कि ज़रूरत पड़ने पर वह अपने ऊपर होने वाले अन्याय का मुहतोड़

जवाब देकर आत्मविश्वास के साथ सुखपूर्वक जीवन बिता सकती है।

सबसे अहम् बात यह है कि प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया में नारी कि भूमिका में बदलाव लाने के लिए पहला कदम स्वयं नारियों को ही उठाना होगा तभी यह सुधारवादी आन्दोलन सफलता प्राप्त करेगा और एक स्वस्थ और सुखी समाज कि कल्पना कि जा सकती है।

आखिर औरतें कहां जाएं? इस बेरहम दुनिया में उनका जीना मुश्किल है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" (जहां नारियों की पूजा होती है देवता वहां निवास करते है)का मंत्रजाप करने वाले देश में क्या औरतें इतनी असुरक्षित हो गयी हैं कि उनका चलना कठिन है। शहर-दर-शहर उन पर हो रहे हमले और शैतानी हरकतें बताती हैं कि हमारा अपनी जड़ों से नाता टूट गया है। अपने को साबित करने के लिए निकली औरत के खिलाफ शैतानी ताकतें लगी हैं। वे उन्हें फिर उन्हीं कठघरों में बंद कर देना चाहती हैं, जिन्हें सालों बाद तोड़कर वे निकली हैं।

एक लोकतंत्र में होते हुए स्त्रियों के खिलाफ हो रहे जघन्य अपराधों की खबरें हमें शर्मिन्दा करती हैं। ये बताती हैं कि अभी हमें सभ्य होना सीखना है। घरों की चाहरदीवारी से बाहर निकली औरत सुरक्षित घर आ जाए ऐसा समाज हम कब बना पाएंगें? जाहिर तौर पर इसका विकास और उन्नति से कोई लेना-देना नहीं है। इस विषय पर घटिया राजनीति हो रही है पर यह राजनीति का विषय भी नहीं है। पुलिस और कानून का भी नहीं। यह विषय तो समाज का है। समाज के मन में चल रही व्यथा का है। हमने ऐसा समाज क्यों बनने दिया जिसमें कोई स्त्री,कोई बच्चा, कोई बच्ची सुरक्षित नहीं है? क्यों हमारे घरों से लेकर शहरों और गांवों तक उनकी व्यथा एक है?

वे आज हमसे पूछ रही हैं कि आखिर वे कहां जाएं। स्त्री होना दुख है। यह समय इसे सच साबित कर रहा है। जबकि इस दौर में स्त्री ने अपनी सार्मथ्य के झंडे गाड़े हैं। अपनी बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक क्षमता से स्वयं को इस कठिन समय में स्थापित किया है। एक तरफ ये शक्तिमान स्त्रियों का समय है तो दूसरी ओर ये शोषित-पीड़ित स्त्रियों का भी समय है। इसमें औरत के खिलाफ हो रहे अपराध निरंतर और वीभत्स होते जा रहे हैं। इसमें समाज की भूमिका प्रतिरोध की है। वह कर भी रहा है, किंतु इसका असर गायब दिखता है।

कानून हार मान चुके हैं और पुलिस का भय किसी को नहीं हैं। अपराधी अपनी कर रहे हैं और उन्हें नियंत्रित करने वाले हाथ खुद को अक्षम पा रहे हैं। कड़े कानून आखिर क्या कर सकते हैं, यह भी इससे पता चलता है। अपराधी बेखौफ हैं और अनियंत्रित भी। स्त्रियों के खिलाफ ये अपराध क्या अचानक बढ़े हैं या मीडिया कवरेज इन्हें कुछ ज्यादा मिल रहा है। इसमें मुलायम सिंह यादव की जनसंख्या जैसी चिंताओं को भी जोड़ लीजिए तो भी हमारा पूरा समाज कठघरे में खड़ा है। स्त्री को गुलाम और दास समझने की मानसिकता भी इसमें जुडी है। पुरूष, स्त्री को जीतना चाहता है। वह इसे अपने पक्ष में एक ट्राफी की तरह इस्तेमाल करना चाहता है। यह मानसिकता कहां से आती है ?हमारे घर-परिवार, नाते-रिश्ते भी सुरक्षित नहीं रहे। छोटे बच्चों और शिशुओं के खिलाफ हो रहे अपराध और उनके खिलाफ होती हिंसा हमें यही बताती है।

इसकी जड़ें हमें अपने परिवारों में तलाशनी होंगीं। अपने परिवारों से ही इसकी शुरूआत करनी होगी, जहां स्त्री को आदर देने का वातावरण बनाना होगा। परिवारों में ही बच्चों में शुरू से ऐसे संस्कार भरने होंगें जहां स्त्री की तरफ देखने का नजरिया बदलना होगा। बेटे-बेटी में भेद करती कहानियां आज भी हमारे समाज में गूंजती हैं। ये बातें साबित करती हैं और स्थापित करती हैं कि बेटा कुछ खास है। इससे एक नकारात्मक भावना का विकास होता है। इस सोच से समूचा भारतीय समाज ग्रस्त है ऐसा नहीं है, किंतु कुछ उदाहरण भी वातावरण बिगाड़ने का काम करते हैं। आज की औरत का सपना आगे बढ़ने और अपने सपनों को सच करने का है। वह पुरूष सत्ता को चुनौती देती हुयी दिखती है। किंतु सही मायने में वह पूरक बन रही है। समाज को अपना योगदान दे रही है। किंतु उसके इस योगदान ने उसे निशाने पर ले लिया है। उसकी शुचिता के अपहरण के प्रयास चौतरफा दिखते हैं।

फिल्म, टीवी, विज्ञापन और मीडिया माध्यमों से जो स्त्री प्रक्षेपित की जा रही है, वह यह नहीं है। उसे बाजार लुभा रहा है। बाजार चाहता है कि औरत उसे चलाने वाली शक्ति बने, उसे गति देने वाली ताकत बने। इसलिए बाजार ने एक नई औरत बाजार में उतार दी है। जिसे देखकर समाज भौचक है। इस औरत ने फिल्मों,विज्ञापनों, मीडिया में जो और जैसी जगह घेरी है उसने समूचे भारतीय समाज को, उसकी बनी-बनाई सोच को हिलाकर रख दिया है। बावजूद इसके हमें रास्ता निकालना होगा।

औरत को गरिमा और मान देने के लिए मानसिकता में परिवर्तन करने की जरूरत है। हमारी शिक्षा में, हमारे जीवन में, हमारी वाणी में, हमारे गान में स्त्री का सौंदर्य, उसकी ताकत मुखर हो। हमें उसे अश्लीलता तक ले जाने की जरूरत कहां है। भारत जैसे देश में नारी अपनी शक्ति, सौंदर्य और श्रद्धा से एक विशेष स्थान रखती है। हमारी संस्कृति में सभी प्रमुख विधाओं की अधिष्ठाता देवियां ही हैं। लक्ष्मी- धन की देवी, सरस्वती -विद्या की, अन्नपूर्णाः खाद्यान्न की, दुर्गा- शक्ति यानि रक्षा की। यह पौराणिक कथाएं भी हैं तो भी हमें सिखाती हैं। बताती हैं कि हमें देवियों के साथ क्या व्यवहार करना है। देवियों को पूजता समाज, उनके मंदिरों में श्रद्धा से झूमता समाज, त्यौहारों पर कन्याओं का पूजन करता समाज, इतना असहिष्णु कैसे हो सकता है, यह एक बड़ा सवाल है। पौराणिक पाठ हमें कुछ और बताते हैं, आधुनिकता का प्रवाह हमें कुछ और बताता है।

हालात यहां तक बिगड़ गए हैं हम खून के रिश्तों को भी भूल रहे हैं। कोई भी समाज आधुनिकता के साथ अग्रणी होता है किंतु विकृतियों के साथ नहीं। हमें आधुनिकता को स्वीकारते हुए विकृतियों का त्याग करना होगा। ये विकृतियां मानसिक भी हैं और वैचारिक भी। हमें एक ऐसे समाज की रचना की ओर बढ़ना होगा,जहां हर बच्चा सहअस्तित्व की भावना के साथ विकसित हो। उसे अपने साथ वाले के प्रति संवेदना हो, उसके प्रति सम्मान हो और रिश्तों की गहरी समझ हो। सतत संवाद, अभ्यास और शिक्षण संस्थाओं में काम करने वाले लोगों की यह विशेष जिम्मेदारी है। समस्या यह है कि शिक्षक तो हार ही रहे हैं, माता-पिता भी संततियों के आगे समर्पण कर चुके हैं। वे सब मिलकर या तो सिखा नहीं पा रहे हैं या वह ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं है।

जब उसका शिक्षक ही कक्षा में उपस्थित छात्र तक नहीं पहुंच पा रहा है तो संकट और गहरा हो जाता है। हमारे आसपास के संकट यही बताते हैं कि शिक्षा और परिवार दोनों ने इस समय में अपनी उपादेयता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्त्रियों के खिलाफ इतना निरंतर और व्यापक होता अपराध, उनका घटता सम्मान हमें कई तरह से प्रश्नांकित कर रहा है। यहां बात प्रदेश, जिले और गांव की नहीं है, यही आज भारत का चेहरा है। कर्नाटक से लेकर उत्तर प्रदेश से एक जैसी सूचनाएं व्यथित करती हैं। राजनेताओं के बोल दंश दे रहे हैं और हम भारतवासी सिर झुकाए सब सुनने और झेलने के लिए विवश हैं।

अपने समाज और अपने लोगों पर कभी स्त्री को भरोसा था, वह भरोसा दरका नहीं है, टूट चुका है। किंतु वह कहां जाए किससे कहे। इस मीडिया समय में वह एक खबर से ज्यादा कहां है। एक खबर के बाद दूसरी खबर और उसके बाद तीसरी। इस सिलसिले को रोकने के लिए कौन आएगा, कहना कठिन है। किंतु एक जीवंत समाज अपने समाज के प्रश्नों के हल खुद खोजता है। वह टीवी बहसों से प्रभावित नहीं होता, जो हमेशा अंतहीन और प्रायः निष्कर्षहीन ही होती हैं। स्त्री की सुरक्षा के सवाल पर भी हमने आज ही सोचने और कुछ करने की शुरूआत नहीं की तो कल बहुत देर हो जाएगी।